## 2.4 भारत में कृषि के पिछड़ेपन के कारण

अथवा भारत में निम्न कृषि उत्पदकता के कारण (Caused of low agriculture productivities in India)—

भारत में कृषि उत्पादकता के कम होने के कारणो को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से, निम्न पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) प्राकृतिक घटक,

(ii) तकनीकी घटक,

(iii) संस्थागत घटक,

(iv) आर्थिक घटक, तथा

(v) अन्य सामान्य घटक ।

**(I) प्राकृतिक घटक** (Natural factors)—भारतीय कृषि के पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण प्राकृतिक घटक है। कभी वर्षा होती ही नहीं और कभी अतिवृष्टि हो जाती है। दोनों ही स्थितियों में फसल नष्ट हो जाती है। अत: देश मे कृषि/उत्पादन में उच्चावचन का एक मुख्य कारण प्राकृतिक घटक है ।

**(ii) तकनीकी घटक** (Technological factors)—भारतीय कृषि के पिछड़ेपन का दूसरा कारण तकनीकी घटक है। तकनीकी घटक के अन्तर्गत निम्नलिखित घटक आते हैं–

**(a) उत्पादन की पिछड़ी तकनीक** (Poor technique of production)—भारतीय कृषि में पुरानी तकनीक का प्रयोग होने से कृषि की उत्पादकता कम हो जाती है। आज का युग वैज्ञानिक युग है । खेती के लिए नयी-नयी तकनीकों का आविष्कार हुआ है । परन्तु भारतीय कृषि में अभी भी पारम्परिक पद्धति के प्रयोग से ही खेती की जाती है ।

Scanned with CamScanner

**(b) अच्छे बीजों तथा खादों के पर्याप्त प्रयोग का अभाव** (Lack of improved seeds, manures and fertilizers)—भारत में अच्छे बीज तथा खाद के पर्याप्त प्रयोग का अभाव है। अच्छी उपज तभी होगी जब अच्छे बीज खाद का प्रयोग किया जायेगा। भारत में खाद का प्रयोग उन्नत देशों के मुकाबले बहुत कम होता है । यहाँ प्रति हैक्टेयर खाद का प्रयोग 50 किलोग्राम है जबकि अमरीका में 54 किलोग्राम, जापान के 427 किलोग्राम, आस्ट्रिया में 255 किलोग्राम और फ्रांस में 301 किलोग्राम है ।

**(c) अपर्याप्त सिंचाई-व्यवस्था** (Inadequate Irrigation facilities)—भारत में सिंचाई की अपर्याप्त व्यवस्था होने के कारण भी कृषि उत्पादकता कम है । देश में 143 मिलियन हैक्टेयर कृषि क्षेत्र में केवल 69.7 मिलियन हैक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई के साधनों की व्यवस्था है अर्थात कृषि क्षेत्र में 49 प्रतिशत भाग में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है ।

**(d) फसलों की असुरक्षा** (Lack of security of crops)—कृषि उत्पादकता में कमी का कारण फसलों की बर्बादी भी है। एक अनुमान के अनुसार करीब 5% फसलों को कीड़े एवं चूहे खा जाते हैं ।

**(iii) संस्थागत घटक** (Institutional factors)—संस्थागत घटक के अन्तर्गत निम्नलिखित कारणों से भारतीय कृषि की उत्पादकता कम है ।

**(a) जोतों का छोटा आकार** (Small size of holdings)—कुछ लोगों का मत है कि कृषि की उत्पादकता में कमी का मुख्य कारण जोतों का छोटा आकार है । भारत में जोतों का आकार विकसित देशों की तुलना में बहुत ही कम है । भारत में जोतों का औसत आकर 6.57 एकड़ है जबकि न्यूजीलैंड में 490 एकड़, अमरीका में 215.8 एकड़ और ब्रिटेन में 66.5 एकड़ है । भारत में 54.6% जोतें एक हैक्टेयर से भी कम है ।

**(b) भू-पट्टेदारी का ढाँचा** (Pattern of land tenancy)—भारत में भू-पट्टेदार की दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण कृषि में उत्पादकता की कमी है । यहाँ भू-स्वामित्व बड़े-बड़े जमींदारों के पास है । छोटे काश्तकार के पास नहीं होने से भ-सुधार काकाम नहीं हो पा रहा है। इससे कृषि में पर्याप्त उपज नहीं हो पाती हे ।

**(iv) आर्थिक घटक** (Economic factors)—आर्थिक घटक के अन्तर्गत निम्नलिखिा घटक है जिनसे कृषि के उत्पादकता में कमी है–

**(a) पर्याप्त वित्त का अभाव** (Lack of adequate finance)—भारत में कृषि-कार्य के लिए किसानों को वित्त उपलब्ध नहीं होता है। यहाँ किसानों के लिए बैंक से ऋण नहीं मिलता है । अन्त में साहूकार और महाजन से अधिक सूद पर ऋण लेना पड़ता है। साहूकार और महाजन किसानों से अधिक सूद लेता है। ऐसी स्थिति में किसानों को काफी वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़त है। समय पर कृषि कार्य नहीं होने से इसमें उत्पादकता कम होती है ।

**(b) दोषपूर्ण विपणन व्यवस्था** (defective system of marketing)—भारत में कृषि विपणन व्यवस्था काफी दोषपूर्ण रही है । कृषि पदार्थ के विक्रय के लिए संगठित बाजारों की संख्या कम है। असंगठित बाजारों में कृषि पदार्थों की बिक्री करने से किसानों को अपनी उपज का मूलय 50 से 70 प्रतिशत तक ही प्राप्त होता हे। इसका प्रभाव यह होता है कि कृषक की प्रति एकड़ मौद्रिक उत्पादकता का स्तर कम हो जाता है।

**(v) अन्य सामान्य घटक** (Other general factors)—अन्य सामान्य घटक के अन्तर्गत निम्नलिखिा

Scanned with CamScanner

कारण आते हैं–

(a) कृषि पर **जनसंख्या का बढ़ता भार** (Tremendous pressure of population on agriculture)—भारत में कृषि उत्पादकता में कमी का एक प्रमुख कारण कृषि पर जनसंख्या का अधिक भार है। सन् 1901 में देश के प्रति व्यक्ति क्षेत्र 0.43 हेक्टेयर था, जो सन् 1981 में घटकर केवल 0.23 हेक्टेयर रह गया।

**(b) भारतीय कृषक का परमपरावादी दृष्टिकोण** (Conservative outlook of teh farmer)—भारत में कृषकों के बीच शिक्षा की कमी के कारण वे अन्धविश्वासी और परम्परावादी हो गये हैं। खेती के लिए वे नये तकनीकों का भी प्रयोग नहीं करते हैं। इस अन्धविश्वास और परमपरावादी दृष्टिकोण के चलते यहाँ कृषि की उत्पादकता में कमी रहती है।

Scanned with CamScanner